प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

विवेकानन्द जयंती पर राष्ट्रीय सम्मेलन प्रारम्भ

पंतनगर। १२ जनवरी २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द की १५५वीं जयंती पर आज दो-दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन 'जनसांख्यिकी लाभांश में भारत की युवा नीति की भूमिका' प्रारम्भ हुआ, जिसका उद्घाटन डा. रतन सिंह सभागार में प्रातः ०९:३० बजे हुआ। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (एबीवीपी) के राष्ट्रीय संगठन सचिव, **श्री सुनील अम्बेकर**, थे। सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, ने की। इस अवसर पर सुरभि फाउंडेशन के अध्यक्ष, श्री आलोक कुमार गुप्ता एवं विवेकानन्द केन्द्र, कन्याकुमारी से श्री रवि नायडू भी मंचासीन थे।

कुलपति, प्रो. मिश्रा ने अपने सम्बोधन में स्वामी विवेकानन्द को देश का सबसे बडा आध्यात्मिक एवं प्रेरक नेता बताते हुए कहा कि उन्होंने मानवता की भलाई के लिए काम किया। साथ ही संस्कार एवं आदर्श देने के लिए शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया। प्रो. मिश्रा ने स्वामी विवेकानन्द के 'उठो, जागो एवं लक्ष्य को प्राप्त करने तक न रूको' उपदेश को सभी युवाओं को अपना उद्देश्य बनाने के लिए कहा। उन्होंने भारत को पुरातन जमाने से विश्व गुरू होने के बारे में बताया तथा कहा कि अमेरिका के 'नासा' के अस्तित्व में आने से हजारों वर्ष पहले भारत का खगोल ज्ञान काफी आगे था, जिसका प्रमाण हमारे पंचांग एवं अन्य पुरातन साहित्य हैं। भारत को युवा देश बताते हुए उन्होंने देश के युवाओं को विवेकानन्द के उपदेश 'स्वयं एवं अपने देश पर भरोसा करो' को अपने जीवन में अपनाने के लिए कहा।

मुख्य अतिथि **श्री सुनील अम्बेकर** ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द के बारे में जितना भी कहा जाये वह कम है। उन्हें चमत्कारी युवा बताते हुए उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण उन्हें आज भी सभी पीढियों के युवाओं के लिए प्रेरक बताया। **श्री अम्बेकर** ने कहा कि जिस समय भारत के लोगों को हीनता की दृष्टि से देखा जा रहा था उस समय स्वामी जी दुनियाभर से भारत एवं इसके लोगों के लिए आत्मसम्मान लेकर आये तथा देश को नयी दिशा प्रदान की। स्वामी जी ने बताया कि देश को जोड़ने के लिए भारत मां एक सूत्र की तरह है तथा उसे समझकर ही देश को जोड़ा जा सकता है। श्री सुनील ने स्वामी विवेकानन्द के कथनों को आज के समय में और ज्यादा प्रासंगिक बताया तथा युवाओं को सही दिशा देना आवश्यक बताया।

श्री रवि नायडू ने बताया कि स्वामी विवेकानन्द जी ने विश्व के विभिन्न देशों के भ्रमण एवं अध्यन के बाद कुछ भविष्यवाणियां की थीं, जो आज सच सावित हो रही हैं। इनमें से एक भविष्यवाणी भारत को अनदेखी एवं अकल्पनीय परिस्थितियों में आजादी मिलना थी, जो सच हुयी। यूरोप के देशों के भ्रमण के बाद स्वामी जी ने युद्ध की गंध आने की बात कही थी जो बाद में दो विश्व युद्धों के रूप में सच साबित हुयी। उन्होंने चीन को विश्व शक्ति के रूप में उभरने तथा उसके तुरन्त बाद भारत के उठने की भविष्यवाणी भी की थी। श्री नायडू ने कहा कि अब भारत के पुनरोत्थान का समय आ गया है, जिसे हम अपने जीवनकाल में ही देख पायेंगे। श्री नायडू ने स्वामी जी के विचार कि, प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक लक्ष्य है तथा भारत का लक्ष्य अध्यात्म के साथ एकता है, को सभी युवाओं को समझने के लिए कहा तथा अपने परिवार, समाज, देश, के लिए अपना सर्वस्व देने के लिए कहा।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. एस. के. कश्यप, विभागाध्यक्ष कृषि संचार विभाग, द्वारा सभी का स्वागत किया गया तथा कार्यक्रम का संचालन उनके व विश्वविद्यालय की छात्राओं द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में कुलपति द्वारा सभी अतिथियों को शाल ओढ़ाकर एवं प्रतिक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। युवाओं द्वारा प्रकाशित तीन पुस्तकों का भी मंचासीन अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। अगले सत्र में कबीर गायक पद्मश्री श्री प्रहलाद विपणिया, वायुसेना अधिकारी वाणी मिश्रा, नवोन्मेष विशेषज्ञ श्री हिरण्मय महंता, सूफी गायक **कैलाश खेर**, पूर्व सांसद श्री बलराज पासी इत्यादि महानुभावों ने उपस्थित युवाओं के साथ विचार विमर्श किया।

संगोष्ठी से पूर्व प्रातः ६:०० बजे एक जागरूकता रैली निकाली गयी, जिसमें ५०० से अधिक छात्र-छात्राऐं सम्मिलित हुए। स्टीवेंसन स्टेडियम से प्रारम्भ हुयी इस रैली का नेतृत्व कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा ने किया। इस अवसर पर लोक प्रिय सूफी गायक कैलाश खेर एवं अन्य अतिथि भी उपस्थित थे। रैली का समापन गांधी भवन पर हुआ।

राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में सम्बोधित करते मुख्य अतिथि श्री सुनील अम्बेडकर।